Self Respect

15th May,2014

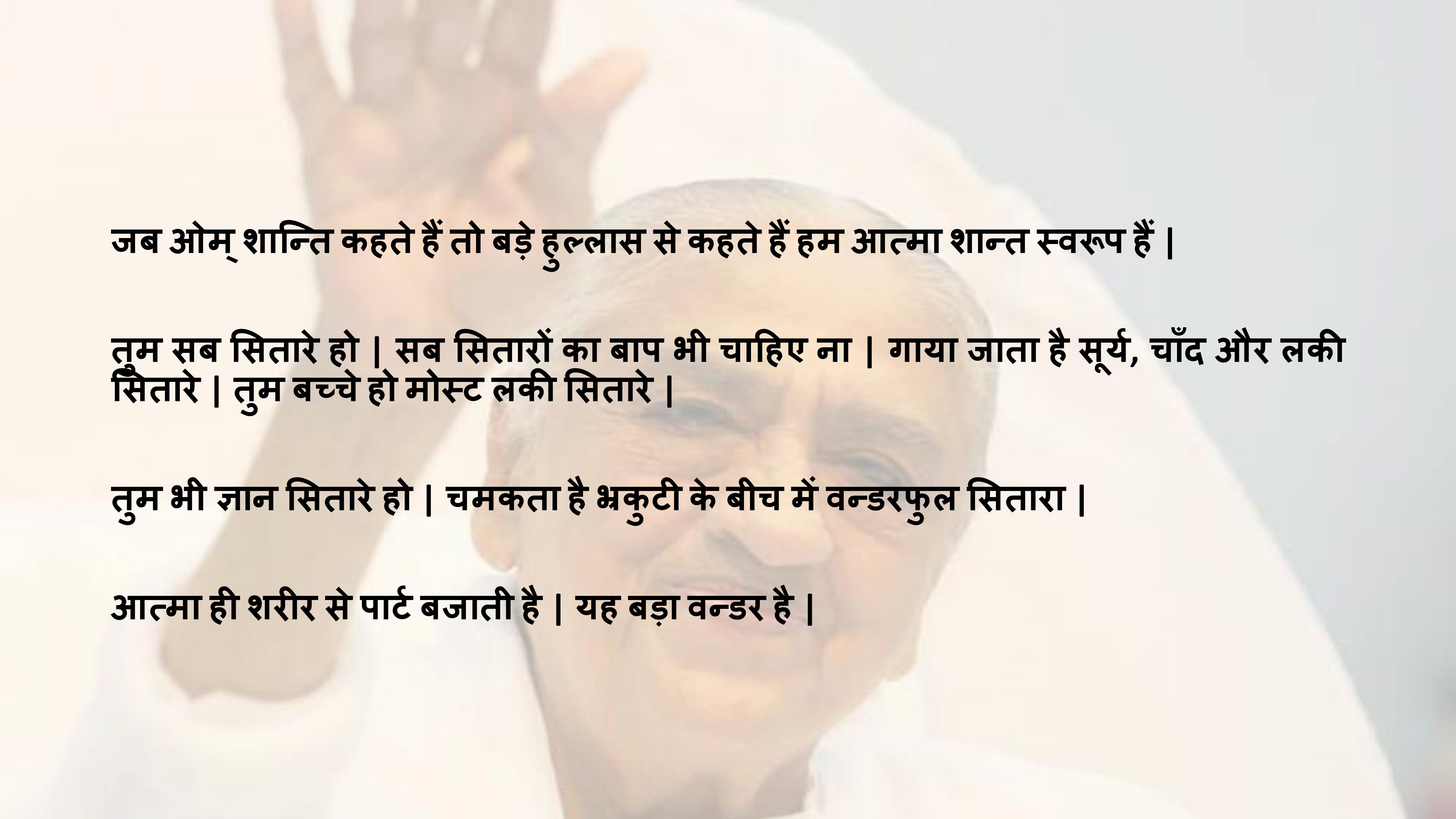

जब ओम् शान्ति कहते हैं तो बड़े हुल्लास से कहते हैं हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं |

तुम सब सितारे हो | सब सितारों का बाप भी चाहिए ना | गाया जाता है सूर्य, चाँद और लकी सितारे | तुम बच्चे हो मोस्ट लकी सितारे |

तुम भी ज्ञान सितारे हो | चमकता है भ्रकुटी के बीच में वन्डरफुल सितारा |

आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है | यह बड़ा वन्डर है |

दिलवाला मन्दिर यादगार बहुत अच्छा एक्यूरेट बना हुआ है | तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है | अभी तुमको रोशनी मिली है और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है |

अब बाप जो ट्रुथ है, वह बैठकर तुमको ट्रुथ सुनाते हैं, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो | सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि मैं बैठ गया है |

बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं | तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है | दिव्य दृष्टि दे रहे हैं

बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजधानी ले आये हैं | सिर्फ़ कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो |

रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं | तुम जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार |

संगमयुग पर सिर्फ़ ब्राह्मण होते हैं | अब तुम ब्राह्मण समझते हो रात पूरी हो दिन शुरू होना है | वह शूद्र वर्ण वाले थोड़ेही समझते हैं |

मनुष्य तो बहुत आवाज़ से भक्ति आदि के गीत गाते हैं | तुमको तो जाना है आवाज़ से परे | तुम तो अपने बाप की ही याद में मस्त रहते हो | आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है | आत्मा समझती है अब बाप को याद करना है |

अब तुमको तो ज्ञान मिला है | वह लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढ़ाते हैं | अब बाप तो है निराकार |

यहाँ तो मैं सम्मुख हूँ ना | आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट है, नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं | सर्चलाईट दे रहे हैं |

इस समय सारे विश्व में अशान्ति है | तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से | बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से | कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो |

यहाँ तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला | बाप ही जानते हैं – बच्चों को क्या देना है | जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे |

तुम हो ब्राह्मण प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ | प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर | सबसे पहला पत्ता है मनुष्य सृष्टि का |

कहता हूँ हे आत्माओं, मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे | मनुष्य से देवता बनना है ना |

तुम जानते हो एक है रूद्र माला, दूसरी है वैजयन्ती माला विष्णु की | उसके लिए तुम पुरुषार्थ करते हो, बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे | जिस माला का तुम भक्ति मार्ग में सिमरण करते हो परन्तु जानते नहीं हो कि यह माला किसकी है, ऊपर में फूल कौन है, फिर मेरु क्या है, दाने कौन हैं?

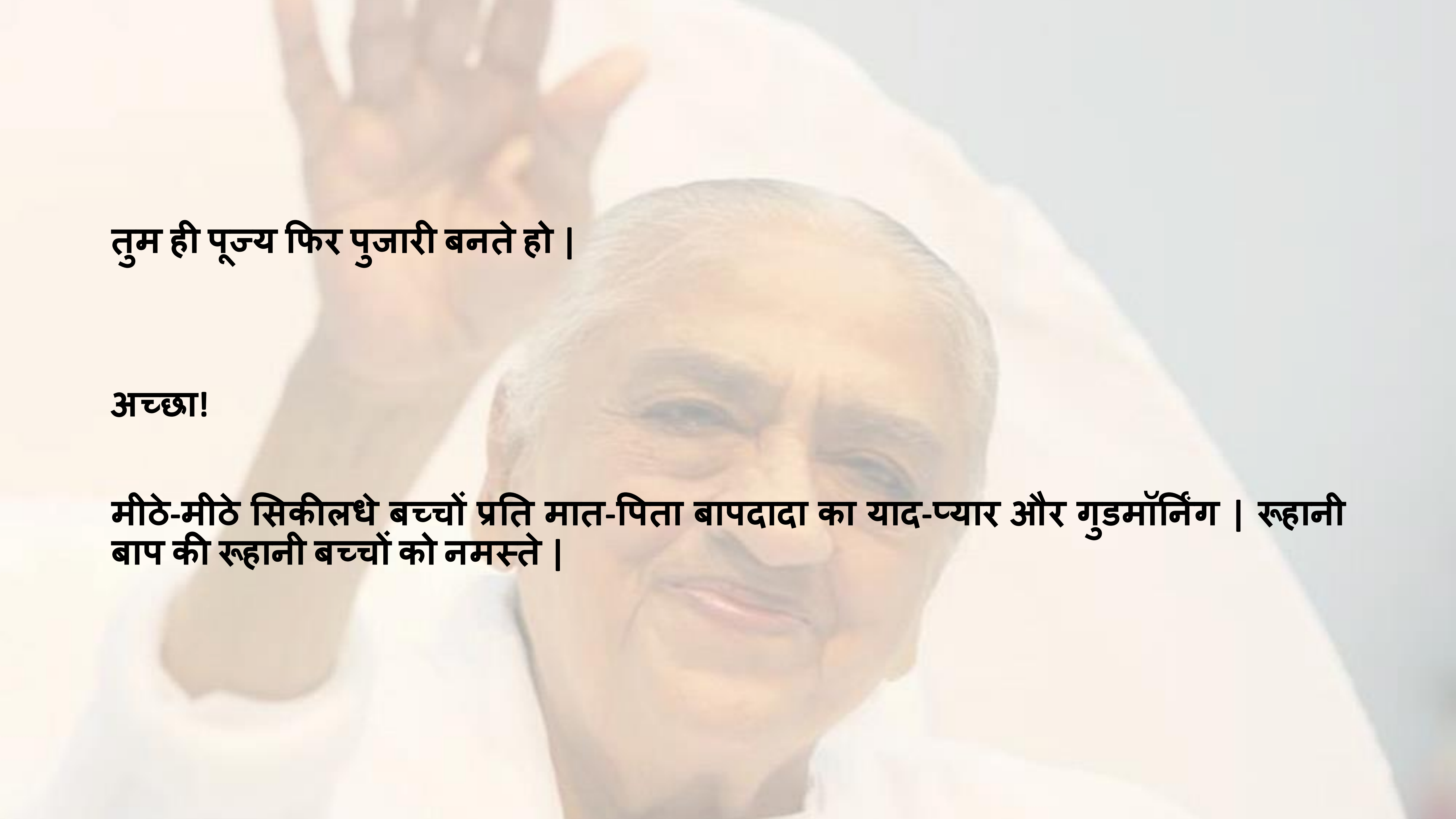

तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो |

अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |